व्याख्यान रिपोर्ट

दिनांक 13 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस (14 सितंबर)की पूर्व संध्या पर चंद्रधारी मिथिला विज्ञान महाविद्यालय ,दरभंगा के ऐतिहासिक कामेश्वर भवन में एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया । व्याख्यान का विषय था 'हिंदी :घर और बाहर '।इस विषय पर व्याख्यान देने के लिए आचार्य प्रवर प्रोफेसर प्रभाकर पाठक पूर्व संकायाध्यक्ष (मानवीकि)एवं पूर्व अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग ,ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर दरभंगा थे । कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर संजीव कुमार मिश्रा प्रधानाचार्य,सी एम साइंस कॉलेज दरभंगा ने की । व्याख्यान के आयोजन सचिव डॉ दिनेश प्रसाद साह ,हिंदी विभागाध्यक्ष थे । जबकि आयोजन सदस्य के रूप में डॉक्टर सत्येंद्र कुमार झा मैथिली विभागाध्यक्ष,डॉक्टर युगेश्वर साह अंग्रेजी विभागाध्यक्ष एवं डॉक्टर ऋचा कुमारी थी । वही मीडिया प्रभारी के रूप में श्री प्रवीण कुमार झा ने बखूबी अपने दायित्व का निर्वहन किया । आयोजन सचिव डॉ दिनेश प्रसाद साह एसोसिएट प्रोफेसर सह हिंदी विभागाध्यक्ष सीएम साइंस कॉलेज दरभंगा ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया एवं व्याख्यान के संदर्भ को उद्घाटित करते हुए कहा कि आज हम सभी हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर भारत के माथे की बिंदी हम सब की प्यारी और सभी भाषाओं में न्यारी हिंदी मात्र एक भाषा नहीं अपितु हमारी संस्कृति ,हमारी पहचान और आत्मा का प्रतीक है । हम हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते हैं।यह वही दिन है जब 1949 को संविधान

CamScanner

सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था । हिंदी अब मात्र भारत तक सीमित नहीं है । यह संस्कृति कला और विचारों की वैश्विक भाषा बनती जा रही है ।

तकनीक,मीडिया और प्रवासी भारतीय के सहयोग से अब यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान मजबूत कर रही है । अब सोशल मीडिया ,यू ट्यूब, इंस्टाग्राम और ब्लागिंग के माध्यम से हिंदी कंटेंट की मांग बढ़ी है । कई बड़े प्लेटफार्म जैसे गूगल ,फेसबुक,ट्विटर आदि ने हिंदी भाषा में इंटरफेस और कंटेंट उपलब्ध कराना शुरू कर दिया है । हिंदी में ई-लर्निंग ,एप्स और वेब पोर्टलों की संख्या बढ़ी है । अब केंद्रीय सरकार द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जैसे यू एन ओ आदि स्थलों पर हिंदी में व्याख्यान दिए जा रहे हैं । विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में अब पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी पढ़ाई जाती है।विश्व के अनेक भाषाओं में अब हिंदी की उत्कृष्ट रचनाएं अनूदित होकर संपूर्ण विश्व में जा रही हैं।बॉलीवुड के कारण कई

भारतीय भी हिंदी बोलना सीख रहे हैं भले ही वह मूल हिंदी में ना हो लेकिन यह एक भाषाई पुल का काम कर रही है । अब विदेशों में भी भाषा सीखने की रुचि बढी है ,विशेष रूप से भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति और बॉलीवुड की लोकप्रियता के चलते । आज 'हिंदी साहित्य भारती 'जो एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है और विश्व की सबसे बड़ी भाषायी संस्था है ; के द्वारा विश्व के 135 देशों में हिंदी की

समृद्धि व उन्नयन के लिए एक से बढ़कर कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं ।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर प्रभाकर पाठक ने व्याख्यान के क्रम में कहा

'कुछ कर दिखाओ ऐसा

इतिहास ~~आकाश~~ जगमगाए

धरती हरी भरी हो जाए

आकाश ~~गगन~~ मुस्कुराए '

हिंदी का प्रारंभिक रूप सर्वप्रथम हमें खुसरो की पहेलियों में देखने को मिलता है । वह कहते हैं

एक थाल मोती से भरा

सबके सिर पर औंधा धरा

चारों ओर वह थाली फीरे

मोती उससे एक न गिरे।

प्रोफेसर पाठक ने जोर देकर कहा कि हिंदी कभी घर की भाषा रही ही नहीं ,घर से बाहर रहकर ही खूब फली फूली है । छठी शताब्दी से लेकर पृथ्वीराज चौहान के पतन तक हिंदी अपना स्वरूप स्थिर कर ली थी। 1857 के बाद और भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय खड़ी बोली हिंदी जन्म ले चुकी थी पर वह खड़ी बोली आज की हिंदी नहीं थी । भारतेंदु ने इसकी सृजनशीलता को स्थापित किया । आगे उन्होंने कहा हमें अपनी वर्तनी को सुधारने की आवश्यकता है । खासकर मिथिलांचल में

उच्चारण की दृष्टि से र और ड़ वर्ण मेंअंतर लोग नहीं कर पाते ।इस तरह तीनों स, श,और ष में भी स्थिति है । अपने वक्तव्य के क्रम में आगे उन्होंने कहा कि हिंदी को कमतर नहीं आंका जा सकता । हिंदी की विडंबना है कि यहां अंग्रेजी पर अधिक ध्यान दिया जाता है जबकि वास्तविकता यही है कि हिंदी अंग्रेजी से किसी रूप में कम नहीं है।अंग्रेजी में यदि किसी ने शेक्सपियर को पढ़कर सब कुछ पढ़ लिया तो हिंदी में तुलसीदास हैं । दोनों ने 16 वीं सदी में सृजनशीलता से लोकप्रियता हासिल की।हिंदी को महान बनाने में विवेकानंद का भी अहम योगदान है ।

सच तो यह है कि भाषा बोलने से कम बढ़ती है जबकि व्यक्तित्व से अधिक । इसीलिए तुम अंग्रेजी पढ़ो लेकिन रहो भारत में। हमारे यहां 80% युवा ऐसे हैं जिसे हम जेन जेड कहते हैं । लेकिन एक बूढ़ा,एक अकेला व्यक्ति जिसमें भाषाई कौशल हो सब पर भारी पड़ता है । दुष्यंत कुमार का एक शेर प्रसिद्ध है

एक बूढ़ा आदमी है मुल्क में या यूं कहो
इस अंधेरी कोठरी में एक रोशनदान से ।

टी एस इलियट ने भी अपनी पुस्तक 'डी वेस्टलैंड ' के अंत में वृहदारण्यक उपनिषद् के मंत्रों का स्वस्तिवाचन की तरह प्रयोग किया है । इससे प्रकट होता है कि पश्चिमी विद्वान भी हिंदी के उत्स संस्कृत से भी कितने परिचित थे और उसके प्रेमी थे।

आज विश्व की जनसंख्या प्रायः साढ़े सात अरब है इसमें प्रत्येक 70 वां व्यक्ति हिंदी भाषी है । यही कारण है कि मंडारिन को छोड़कर और अंग्रेजी को पछाड़ कर हिंदी विश्व में द्वितीय स्थान प्राप्त करने की होड़ में है ।किसी भी भाषा के लिए विश्व भाषा बनने की शर्तें कुछ इस प्रकार हैं,जैसे - सृजनशीलता ,कालदृढ़ता,सांस्कृतिक ,आर्थिक और राजनीतिक प्रगतिशीलता ,संबेद्य साहित्य ,प्राविधिक और तकनीकी वैज्ञानिक प्राणियों की ग्रहणशीलता और बहुजन भाषिता । व्याख्यान का समापन इन्होंने स्वरचित एक अद्भुत कविता' जो शरद गोद में खेली   मैं हिंदी हूं अलबेली' से किया जिसमें हिंदी साहित्य के इतिहास का संपूर्ण इतिहास समाहित है ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रोफेसर संजीव कुमार मिश्रा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं हमारी सांस्कृतिक जीवन रेखा है ,अस्मिता है।हिंदी के प्रति मेरा अनुराग अचल और अडिग है । रामचरितमानस हिंदी का सर्वोत्कृष्ट साहित्य है जिसमें जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों का सूत्र है।आगे उन्होंने कहा कि घर से मेरा तात्पर्य मात्र एक भौगोलिक भूखंड नहीं अपितु हर उस जगह से है जहां से हिंदी उद्भूत हुई । हिंदी मात्र अब भारत तक सीमित नहीं है बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है । दुनिया के अनेक देशों में हिंदी भाषी समुदाय न केवल मौजूद हैं बल्कि वहां हिंदी भाषा साहित्य ,संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से अपनी जड़ों को मजबूत बना रहा

CamScanner

है । आज अमेरिका ,कनाडा ,ब्रिटेन,दक्षिण अफ्रीका ,फिजी ,सूरीनाम ,मॉरीशस जैसे देशों में बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय रहते हैं और अपने आचार - व्यवहार द्वारा हिंदी का प्रचार- प्रसार कर रहे हैं । कई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों जैसे हार्वर्ड,ऑक्सफोर्ड ,कैंब्रिज आदि में हिंदी भाषा और साहित्य पढ़ाया जा रहा है।यह मिथक है कि विज्ञान के छात्र साहित्य के प्रेमी नहीं होते ।इस दिशा में नेहरू से लेकर चेतन भगत तक का उदाहरण उन्होंने हमारे सामने प्रस्तुत किया । आगेउन्होंने कहा कि हिंदी में अभी भी उतना ही काम हो रहा है जितना की अंग्रेजी में।आज हिंदी इंटरनेट और सोशल मीडिया में प्रयुक्त होने वाली विश्व की दूसरी भाषा है । भारत ही नहीं विश्व के 133 देशों में हिंदी का न सिर्फ सशक्त प्रयोग हो रहा है बल्कि 70 देशों के 150 विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा शामिल है । इस प्रकार हिंदी अब अपना अंतरराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर रही है ।

डॉक्टर सत्येंद्र कुमार झा एवं डॉक्टर ऋचा कुमारी के संचालन में आयोजित व्याख्यान में धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर युगेश्वर साह ने किया । मौके पर पिछले दिनों आयोजित भाषण प्रतियोगिता में अव्वल आए प्रतिभागियों के बीच प्रमाण पत्र एवं मेडल का भी वितरण प्रधानाचार्य और मुख्य अतिथि के हाथों किया गया।

व्याख्यान से प्राप्त निष्कर्ष

व्याख्यान के मुख्य अतिथि ,अध्यक्ष सह प्रधानाचार्य एवं आयोजन सचिव के दिए गए वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी भाषा का

CamScanner

भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल और उत्कृष्ट है क्योंकि इसके प्रयोग से देश की अर्थनीति,राजनीति व संस्कृति को मजबूती प्राप्त होती है । आज हिंदी मात्रा राष्ट्रीय भाषा नहीं रह गई है बल्कि वह अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनी पहचान बना रही है।

दिनेश प्रसाद साह
14/9/2025

CamScanner

अपनों से अपने घर में हारी है हिंदी : प्रो. प्रभाकर पाठक

सीएम साइंस कॉलेज में हिंदी दिवस पर आयोजित हुआ एकल व्याख्यान कार्यक्रम

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।वर्तमान युग में हिंदी की दशा भले ही उतनी अच्छी ना दिखती हो, लेकिन इसकी दिशा बहुत ही सशक्त है। आज जहां हिंदी का अपना वैश्विक बाजार है वहीं, विश्व स्तर पर हिंदी की सृजनशीलता का बोलबाला है। उक्त बातें ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष सह पीजी हिंदी विभाग के सेवानिवृत अध्यक्ष प्रो प्रभाकर पाठक ने शनिवार को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर सीएम साइंस कॉलेज में आयोजित एकल व्याख्यान में कही। ह्यहिंदीः घर और बाहरह्न विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हिंदी अगर किसी से हारी है तो वह अपनों से हारी है। वह अपने घर में हारी है। वरना, हिंदी साहित्य का क्षितिज इतना विशाल है कि इसे हराना उतना आसान नहीं है। अपने व्याख्यान में उन्होंने बताया कि किस प्रकार 1857 के बाद भारतेंदु ने सर्वप्रथम खड़ी बोली के रूप में हिंदी का सूत्रपात किया। उन्होंने इसकी सृजनशीलता को स्थापित किया। हिंदी का धीरे-धीरे यहां विकास हुआ। उन्होंने कहा कि आज विश्व की जनसंख्या साढे सात अरब है। लेकिन इसमें बमुश्किल एक व्यक्ति हिंदी जानता होगा। बावजूद इसके हिंदी को कमतर कर नहीं आंका जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में हिंदी की विडंबना है यहां अंग्रेजी पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जबकि वास्तविकता यही है कि हिंदी अंग्रेजी किसी रूप में कम नहीं है।अंग्रेजी में यदि किसी ने शेक्सपियर को पढ़कर सब कुछ पढ़ लिया तो उसी प्रकार तुलसीदास की कृति हिंदी के लिए अत्यंत सुखद है। प्रो. पाठक ने हिंदी को महान बनाने में विवेकानंद के अहम योगदान को विस्तार से रेखांकित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रो. संजीव कुमार मिश्र ने कहा कि हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं, हमारी अस्मिता है। यह मिथक है कि विज्ञान के छात्र साहित्य के प्रेमी नहीं होते, इस दिशा में नेहरू से लेकर चेतन भगत तक का उदाहरण हमारे सामने मौजूद है। उन्होंने कहा कि हिंदी में अभी भी उतना ही काम हो रहा है, जितना कि अंग्रेजी में। आज हिंदी इंटरनेट और सोशल मीडिया में प्रयुक्त होने वाली विश्व की दूसरी भाषा है। अध्यक्ष डॉ सत्येंद्र कुमार झा एवं प्रो डॉ ऋचा कुमारी के संयुक्त संचालन में आयोजित एकल व्याख्यान में धन्यवाद ज्ञापन डॉ युगेश्वर साह ने किया। अतिथियों का स्वागत डॉ दिनेश प्रसाद साह ने किया।

CamScanner

अपनों से अपने घर में हारी हिंदी : पाठक

सीएम साइंस कॉलेज में हुआ व्याख्यान

भास्कर न्यूज़|दरभंगा

वर्तमान युग में हिंदी की दशा भले ही उतनी अच्छी ना दिखती हो, लेकिन इसकी दिशा बहुत ही सशक्त है। आज जहां हिंदी का अपना वैश्विक बाजार है वहीं, विश्व स्तर पर हिंदी की सृजनशीलता का बोलबाला है। उक्त बातें ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष सह पीजी हिंदी विभाग के सेवानिवृत अध्यक्ष प्रो प्रभाकर पाठक ने शनिवार को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर सीएम साइंस कॉलेज में आयोजित एकल व्याख्यान में कही। हिंदी : घर और बाहर विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हिंदी अगर किसी से हारी है तो वह अपनों से हारी है। वह अपने घर में हारी है। वरना, हिंदी साहित्य का क्षितिज इतना विशाल है कि इसे हराना उतना आसान नहीं है। अपने व्याख्यान में उन्होंने बताया कि किस प्रकार 1857 के बाद भारतेंदु ने सर्वप्रथम खड़ी बोली के रूप में हिंदी का सूत्रपात किया। उन्होंने इसकी सृजनशीलता को स्थापित किया। हिंदी का धीरे-धीरे यहां विकास हुआ। उन्होंने कहा कि आज विश्व की जनसंख्या साढ़े सात अरब है। लेकिन इसमें बमुश्किल एक व्यक्ति हिंदी जानता होगा। बावजूद इसके हिंदी को कमतर कर नहीं आंका जा सकता है।

संबोधित करते प्रभाकर पाठक।

उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में हिंदी की विडंबना है यहां अंग्रेजी पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जबकि वास्तविकता यही है कि हिंदी अंग्रेजी किसी रूप में कम नहीं है। अंग्रेजी में यदि किसी ने शेक्सपियर को पढ़कर सब कुछ पढ़ लिया तो उसी प्रकार तुलसीदास की कृति हिंदी के लिए अत्यंत सुखद है। इन दोनों में समानता है कि दोनों ने 16वीं सदी में ही सृजनशीलता से लोकप्रियता हासिल की। प्रो. पाठक ने हिंदी को महान बनाने में विवेकानंद के अहम योगदान को विस्तार से रेखांकित किया। अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रो. संजीव कुमार मिश्र ने कहा कि हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं, हमारी अस्मिता है। अपने संबोधन में उन्होंने हिंदी को क्लिष्टता और कृत्रिमता से बचाने की सलाह दी। मैथिली विभाग के अध्यक्ष डॉ सत्येंद्र कुमार झा एवं अंग्रेजी विभाग की शिक्षिका डॉ ऋचा कुमारी के संयुक्त संचालन में आयोजित एकल व्याख्यान में धन्यवाद ज्ञापन अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ युगेश्वर साह ने किया। स्वागत आयोजन सचिव सह हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ दिनेश प्रसाद साह ने किया।

CamScanner

روزنامہ راشٹریہ
سہارا

اپنوں سے اپنے گھر میں ہاری ہے ہندی: پربھاکر پاٹھک

سی ایم سائنس کالج میں ہندی ڈے کے موقع پر سنگل لیکچر پروگرام کا انعقاد

دربھنگہ (ایس این بی)

موجودہ دور میں ہندی کی حالت بھلے ہی اتنی اچھی نہ لگے، لیکن اس کی سمت بہت مضبوط ہے۔ آج جب کہ ہندی کی اپنی عالمی مارکیٹ ہے، ہندی کی تخلیقی صلاحیت عالمی سطح پر غالب ہے۔ مندرجہ بالا الفاظ پروفیسر پربھاکر پاٹھک، سابق ڈین ہیومینٹیز ڈپارٹمنٹ اور للت نارائن متھلا یونیورسٹی کے پی جی ہندی ڈپارٹمنٹ کے ریٹائرڈ صدر کے ہیں، جنہوں نے ہفتہ کو ہندی ڈے کے موقع پر سی ایم سائنس کالج میں منعقدہ سنگل لیکچر پروگرام میں کہی۔ 'ہندی: گھر اور باہر' کے عنوان پر منعقدہ لیکچر میں انہوں نے کہا کہ اگر ہندی کسی سے ہاری ہے تو وہ اپنے لوگوں سے ہاری ہے۔ اپنے ہی گھر میں کھوگئی ہے۔ ورنہ ہندی ادب کا افق اتنا وسیع ہے کہ اسے شکست دینا اتنا آسان نہیں۔ اپنے لیکچر میں انہوں نے بتایا کہ کس طرح 1857 کے بعد بھارتیندو نے کھری بولی کی شکل میں ہندی کی شروعات کی۔ اس نے اس کی تخلیقی صلاحیتوں کو قائم کیا۔ ہندی نے یہاں آہستہ آہستہ ترقی کی۔ انہوں نے کہا کہ آج دنیا کی آبادی ساڑھے سات ارب ہے۔ لیکن ان میں سے شاید ہی کوئی ایک شخص ہندی جانتا ہو۔ اس کے باوجود ہندی کو کم نہیں سمجھا جا سکتا۔ انہوں نے کہا کہ ہندوستان میں ہندی کی ستم ظریفی یہ ہے کہ یہاں انگریزی پر زیادہ توجہ دی جاتی ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ ہندی کسی بھی طرح انگریزی سے کمتر نہیں ہے۔ اگر کسی نے شیکسپیئر کو پڑھ کر انگریزی میں سب کچھ پڑھ لیا ہے تو اسی طرح تلسی داس کا کام ہندی کے لیے بہت خوشگوار ہے۔ ان دونوں میں مماثلت یہ ہے کہ دونوں نے اپنی تخلیقی صلاحیتوں سے 16 ویں صدی میں ہی مقبولیت حاصل کی۔ پروفیسر پاٹھک نے ہندی کو عظیم بنانے میں وویکانند کی اہم شراکت پر تفصیل سے روشنی ڈالی۔

پروگرام کی صدارت کرتے ہوئے پرنسپل پروفیسر سنجیو کمار مشرا نے کہا کہ ہندی نہ صرف ہماری روح ہے بلکہ ہماری پہچان ہے۔ یہ ایک المیہ ہے کہ سائنس کے طالب علم ادب سے محبت نہیں کرتے۔ اس سمت میں نہرو سے لے کر جگجیون بھگت تک کی مثالیں ہمارے سامنے موجود ہیں۔ انہوں نے کہا کہ اب بھی اتنا ہی کام ہندی میں ہو رہا ہے جتنا انگریزی میں۔ آج ہندی انٹرنیٹ اور سوشل میڈیا پر دنیا کی دوسری سب سے زیادہ استعمال ہونے والی زبان ہے۔ ہندی نہ صرف ہندوستان میں بلکہ دنیا کے 133 ممالک میں استعمال ہو رہی ہے بلکہ اسے 70 ممالک کی 150 یونیورسٹیوں کے نصاب میں شامل کیا گیا ہے۔ شعبہ انگریزی کے صدر ڈاکٹر یوگیشور ساہ نے میتھلی شعبہ کے سربراہ ڈاکٹر ستیندر کمار جھا اور شعبہ انگریزی کی ٹیچر ڈاکٹر رچا کماری کی مشترکہ رہنمائی میں منعقدہ سولو لیکچر میں کلمات تشکر پیش کیا۔ مہمانوں کا استقبال ڈاکٹر دنیش پرساد ساہ، آرگنائزنگ سکریٹری اور ہندی شعبہ کے سربراہ نے کیا۔ اس موقع پر جمعہ کو منعقدہ تقریری مقابلے میں اول آنے والے شرکاء میں اسناد اور میڈلز بھی تقسیم کیے گئے۔

CamScanner

विश्व स्तर पर हिंदी का बोलबाला : प्रो. पाठक

दरभंगा। वर्तमान युग में हिंदी की दशा भले ही उतनी अच्छी ना दिखती हो, लेकिन इसकी दिशा बहुत ही सशक्त है। आज जहां हिंदी का अपना वैश्विक बाजार है, वहीं विश्व स्तर पर हिंदी की सृजनशीलता का बोलबाला है। लनामिवि के पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष सह पीजी हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त अध्यक्ष प्रो. प्रभाकर पाठक ने शनिवार को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर सीएम साइंस कॉलेज में आयोजित एकल व्याख्यान में ये बातें कही। हिंदी : घर और बाहर विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हिंदी अगर किसी से हारी है तो वह अपनों से हारी है। वह अपने घर में हारी है। वरना, हिंदी साहित्य का क्षितिज इतना विशाल है कि इसे हराना उतना आसान नहीं है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार 1857 के बाद भारतेंदु ने सर्वप्रथम खड़ी बोली के रूप में हिंदी का सूत्रपात किया। उन्होंने इसकी सृजनशीलता को स्थापित किया। हिंदी का धीरे-धीरे यहां विकास हुआ। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में हिंदी की विडंबना है यहां अंग्रेजी पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि वास्तविकता यही है कि हिंदी अंग्रेजी से किसी रूप में कम नहीं है।

CamScanner

वर्तमान में हिंदी की दशा भले उतनी अच्छी नहीं, पर दिशा बहुत सशक्त

अपनों से अपने ही घर में हारी है हिंदी : प्रो. प्रभाकर पाठक

प्रतिनिधि, दरभंगा.

वर्तमान युग में हिंदी की दशा भले ही उतनी अच्छी नहीं दिखती हो, लेकिन इसकी दिशा बहुत ही सशक्त है. आज जहां हिंदी का अपना वैश्विक बाजार है, वहीं विश्व स्तर पर हिंदी की सृजनशीलता का बोलबाला है. यह बातें लनामिवि के पीजी हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ प्रभाकर पाठक ने शनिवार को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर सीएम साइंस कॉलेज में आयोजित व्याख्यान में कही. """हिंदी : घर और बाहर""" विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हिंदी अगर किसी से हारी है, तो वह अपनों से हारी है. वह अपने घर में हारी है. [illegible]

विचार रखते डॉ प्रभाकर पाठक.

किस प्रकार 1857 के बाद भारतेंदु ने सर्वप्रथम खड़ी बोली के रूप में हिंदी का सूत्रपात किया. सृजनशीलता को स्थापित किया. हिंदी का धीरे-धीरे विकास हुआ. हिंदी को कमतर कर नहीं आंका जा सकता है. हिंदी की [illegible]

वास्तविकता यही है कि हिंदी, अंग्रेजी से किसी रूप में कम नहीं है. अंग्रेजी में यदि किसी ने शेक्सपियर को पढ़कर सब कुछ पढ़ लिया, तो हिंदी में तुलसीदास हैं. दोनों ने 16वीं सदी में सृजनशीलता से लोकप्रियता हासिल [illegible]

हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं, हमारी अस्मिताः प्रो. संजीवः कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रो. संजीव कुमार मिश्र ने कहा कि हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं, हमारी अस्मिता है. यह मिथक है कि विज्ञान के छात्र, साहित्य के प्रेमी नहीं होते. इस दिशा में नेहरू से लेकर चेतन भगत तक का उदाहरण हमारे सामने मौजूद है. कहा कि हिंदी में अभी भी उतना ही काम हो रहा है, जितना कि अंग्रेजी में. आज हिंदी इंटरनेट और सोशल मीडिया में प्रयुक्त होने वाली विश्व की दूसरी भाषा है. भारत ही नहीं विश्व के 133 देशों में हिंदी का न सिर्फ सशक्त प्रयोग हो रहा, बल्कि 70 देशों के 150 विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा शामिल है. डॉ सत्येंद्र कुमार झा एवं डॉ ऋचा कुमारी के संचालन में आयोजित व्याख्यान में धन्यवाद ज्ञापन डॉ युगेश्वर साह ने किया. अतिथियों का स्वागत आयोजन डॉ दिनेश प्रसाद साह ने किया. मौके पर पखवारा को आयोजित भाषा प्रतियोगिता [illegible]

www.jagran.com

हिन्दी अगर किसी से हारी है तो वह अपनों से ही : प्रो. प्रभाकर पाठक

जागरण संवाददाता, दरभंगा : वर्तमान युग में हिंदी की दशा भले ही उतनी अच्छी न दिखती हो, लेकिन इसकी दिशा बहुत ही सशक्त है। आज जहां हिंदी का अपना वैश्विक बाजार है वहीं, विश्व स्तर पर हिंदी की सृजनशीलता का बोलबाला है। उक्त बातें लनामिवि के पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष सह पीजी हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त अध्यक्ष प्रो. प्रभाकर पाठक ने शनिवार को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर सीएम साइंस कालेज में आयोजित एकल व्याख्यान में कही। 'हिंदी घर और बाहर' विषय पर आयोजित

सीएम साइंस कालेज में हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर एकल व्याख्यान, कहा, विश्व में हिन्दी की सृजनशीलता का बोलबाला

व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हिंदी अगर किसी से हारी है तो वह अपनों से हारी है। वह अपने घर में हारी है। कहा, हिंदी साहित्य का क्षितिज इतना विशाल है कि इसे हराना उतना आसान नहीं है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार 1857 के बाद भारतेंदु ने सर्वप्रथम खड़ी बोली के रूप में हिंदी का सूत्रपात किया। उन्होंने इसकी सृजनशीलता को स्थापित किया। हिंदी का धीरे-धीरे यहां विकास हुआ। अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रो. संजीव कुमार मिश्र ने कहा कि हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं, हमारी अस्मिता है। यह मिथक है कि विज्ञान के छात्र साहित्य के प्रेमी नहीं होते, इस दिशा में नेहरू से लेकर चेतन भगत तक का उदाहरण हमारे सामने मौजूद है। मैथिली विभाग के अध्यक्ष डा. सत्येंद्र कुमार झा एवं अंग्रेजी विभाग की डा. ऋचा कुमारी के संयुक्त संचालन में आयोजित एकल व्याख्यान में धन्यवाद ज्ञापन अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा. युगेश्वर साह ने किया। अतिथियों का स्वागत आयोजन सचिव सह हिंदी विभागाध्यक्ष डा. दिनेश प्रसाद साह ने किया। मौके पर शुक्रवार को आयोजित भाषण प्रतियोगिता में अव्वल आए प्रतिभागियों के बीच प्रमाण पत्र एवं मेडल का वितरण भी किया गया।

प्रो प्रभाकर पाठक • जागरण

अपनों से अपने घर में हारी है हिंदी : प्रो. प्रभाकर पाठक

सीएम साइंस कॉलेज में हिंदी दिवस पर हुआ एकल व्याख्यान कार्यक्रम

दरभंगा (आससे)। वर्तमान युग में हिंदी की दशा भले ही उतनी अच्छी ना दिखती हो, लेकिन इसकी दिशा बहुत ही सशक्त है। आज जहां हिंदी का अपना वैश्विक बाजार है वहीं, विश्व स्तर पर हिंदी की सृजनशीलता का बोलबाला है। उक्त बातें ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष सह पीजी हिंदी विभाग के सेवानिवृत अध्यक्ष प्रो प्रभाकर पाठक ने शनिवार को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर सीएम साइंस कॉलेज में आयोजित एकल व्याख्यान में कही। 'हिंदी- घर और बाहर' विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हिंदी अगर किसी से हारी है तो वह अपनों से हारी है। वह अपने घर में हारी है। वरना, हिंदी साहित्य का क्षितिज इतना विशाल है कि इसे हराना उतना आसान नहीं है। अपने व्याख्यान में उन्होंने बताया कि किस प्रकार 1857 के बाद भारतेंदु ने सर्वप्रथम खड़ी बोली के रूप में हिंदी का सूत्रपात किया। उन्होंने इसकी सृजनशीलता को स्थापित किया। हिंदी का धीरे-धीरे यहां विकास हुआ। उन्होंने कहा कि आज विश्व की जनसंख्या साढे सात अरब है। लेकिन इसमें बमुश्किल एक व्यक्ति हिंदी जानता होगा। बावजूद इसके हिंदी को कमतर कर नहीं आंका जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में हिंदी की विडंबना है यहां अंग्रेजी पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जबकि वास्तविकता यही है कि हिंदी अंग्रेजी किसी रूप में कम नहीं है।अंग्रेजी में यदि किसी ने शेक्सपियर को पढ़कर सब कुछ पढ़ लिया तो उसी प्रकार तुलसीदास की कृति हिंदी के लिए अत्यंत सुखद है। प्रो. पाठक ने हिंदी को महान बनाने में विवेकानंद के अहम योगदान को विस्तार से रेखांकित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रो. संजीव कुमार मिश्र ने कहा कि हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं, हमारी अस्मिता है। यह मिथक है कि विज्ञान के छात्र साहित्य के प्रेमी नहीं होते, इस दिशा में नेहरू से लेकर चेतन भगत तक का उदाहरण हमारे सामने मौजूद है। उन्होंने कहा कि हिंदी में अभी भी उतना ही काम हो रहा है, जितना कि अंग्रेजी में। आज हिंदी इंटरनेट और सोशल मीडिया में प्रयुक्त होने वाली विश्व की दूसरी भाषा है। अध्यक्ष डॉ सत्येंद्र कुमार झा एवं प्रो डॉ ऋचा कुमारी के संयुक्त संचालन में आयोजित एकल व्याख्यान में धन्यवाद ज्ञापन डॉ युगेश्वर साह ने किया। अतिथियों का स्वागत डॉ दिनेश प्रसाद साह ने किया।

CamScanner

सीएम साइंस कॉलेज में हिंदी दिवस पर एकल व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित

• अपनों से अपने घर में हारी है हिंदी: प्रो.प्रभाकर पाठक

दरभंगा, स्वराज खबर। वर्तमान युग में हिंदी की दशा भले ही उतनी अच्छी ना दिखती हो, लेकिन इसकी दिशा बहुत ही सशक्त है। आज जहां हिंदी का अपना वैश्विक बाजार है वहां, विश्व स्तर पर हिंदी की सृजनशीलता का बोलबाला है। उक्त बातें ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के पूर्व मानविकी संकायाध्यक्ष सह पीजी हिंदी विभाग के सेवानिवृत अध्यक्ष प्रो प्रभाकर पाठक ने शनिवार को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर सीएम साइंस कॉलेज में आयोजित एकल व्याख्यान में कही। %हिंदी- घर और बाहर% विषय पर आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हिंदी अगर किसी से हारी है तो वह अपनों से हारी है। वह अपने घर में हारी है। वरना, हिंदी साहित्य का क्षितिज इतना विशाल है कि इसे हराना उतना आसान नहीं है। अपने व्याख्यान में उन्होंने बताया कि किस प्रकार 1857 के बाद भारतेंदु ने सर्वप्रथम खड़ी बोली के रूप में हिंदी का सूत्रपात किया। उन्होंने इसकी सृजनशीलता को स्थापित किया। हिंदी का धीरे-धीरे यहां विकास हुआ। उन्होंने कहा कि आज विश्व की जनसंख्या साढ़े सात अरब है। लेकिन इसमें बमुश्किल एक व्यक्ति हिंदी जानता होगा। बावजूद इसके हिंदी को कमतर कर नहीं आंका जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में हिंदी की विडंबना है यहां अंग्रेजी पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जबकि वास्तविकता यही है कि हिंदी अंग्रेजी से किसी रूप में कम नहीं है। अंग्रेजी में यदि किसी ने शेक्सपियर को पढ़कर सब कुछ पढ़ लिया तो उसी प्रकार तुलसीदास की कृति हिंदी के लिए अत्यंत सुखद है। प्रो. पाठक ने हिंदी को महान बनाने में विवेकानंद के अहम योगदान को विस्तार से रेखांकित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रो.संजीव कुमार मिश्र ने कहा कि हिंदी हमारी आत्मा ही नहीं, हमारी अस्मिता है। यह मिथक है कि विज्ञान के छात्र साहित्य के प्रेमी नहीं होते, इस दिशा में नेहरू से लेकर चेतन भगत तक का उदाहरण हमारे सामने मौजूद है। उन्होंने कहा कि हिंदी में अभी भी उतना ही काम हो रहा है, जितना कि अंग्रेजी में। आज हिंदी इंटरनेट और सोशल मीडिया में प्रयुक्त होने वाली विश्व की दूसरी भाषा है। अध्यक्ष डॉ सत्येंद कुमार झा एवं प्रो डॉ ऋचा कुमारी के संयुक्त संचालन में आयोजित एकल व्याख्यान में धन्यवाद ज्ञापन डॉ युगेश्वर साह ने किया। अतिथियों का स्वागत डॉ दिनेश प्रसाद साह ने किया।

CamScanner